© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2023

अल्वेद में व्याकरणदर्शन

रीटा देवी
शोध–छात्रा, संस्कृत विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
डॉ. तरुण
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रत्याहार सूत्रों को माहेश्वर सूत्र भी कहते हैं ।[1] आचार्य पाणिनि ने शिव जी से अक्षरसमाम्नाय के ज्ञान को प्राप्त कर सम्पूर्ण व्याकरण की रचना की ।[2] उपमन्यु ने इन्हीं सूत्रों को आदिसूत्र कहा है ।[3] पाणिनि प्राचीन विद्वानों ने भी प्रत्याहारों का प्रयोग किया है । उज्जवलदत्त और सृष्टिधर के उल्लेख से ज्ञात होता है कि अपिशलि ने ऐच्, भषृ इन प्रत्याहारों का प्रयोग किया है ।[4] पाणिनिकृत उणादिसूत्र में भी 'ञमन्ताड्डः' सूत्रे में ञम् प्रत्याहार का प्रयोग प्राप्त होता है ।[5] नागेशभट्ट द्वारा उद्धृत ऐन्द्र व्याकरण के उल्लोख से यह ज्ञात होता है कि इन्द्र प्रत्याहारों के अन्त में प्रयुक्त अनुबन्धों के उपयोग से परिचित थे ।[6] उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि पाणिनि पुरातन आचार्य भी प्रत्याहारों के प्रयोग से परिचित थे ।

पण्डित नीरज नाभशास्त्री जी ने चौदह प्रत्याहारों पर ही अल्वेद ग्रंथ की रचना की । इन सूत्रों को सम्पूर्ण वेदशास्त्रों का बीज अथवा भण्डार और जिसका अधिक विस्तार भी नहीं हैं जो

---

1. नन्दिकेश्वर काशिका श्लोक 1 : (नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्। उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।)
2. पाणिनीय शिक्षा श्लोक 57 (येनाक्षर समाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्। कृतस्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः।।)
3. महाभाष्यप्रदीपप्रकाश पृ० 299 : (काशिकामादिसूत्राणां नन्दिकेशकृतां शुभाम्। लोकोपकारिणीं दिव्यां व्याकरोमि य थामति।।)
4. महाभाष्य प्रदीप प्रकाश, भूमिका, पृ० 14
5. पाणिनीय उणादि सूत्र संख्या–1.113
6. बृहच्छब्देन्दुशेखरः 'इन्द्रोऽथाह–अन्त्यवर्णसमुद्भूता धातवः परकीर्तिता। महाभाष्य प्रदीपप्रकाश भूमिका, पृ० 14 उद्धृतम्।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के देने वाला है ऐसा कथन किया है ।[7] इन चतुर्दश सूत्रों के विषय में पण्डित नीरजनाभ कहते हैं कि ये चौदह–सूत्र ही चौदह विद्या हैं, ये ही चौदह यम, चौदह इन्द्र, चौदह मनु और चौदह ध्रुवतारक है ।[8]

प्रत्याहारशब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ : प्रत्याहार शब्द 'प्रति+अङ्+हृ+भावे घञ्' प्रत्यय से निष्पन्न होता है । 'प्रत्या+हृ' इसका पुरातन प्रयोग 'प्रत्याहरति' इस रूप में उपलब्ध होता है ।[9] निरुक्त के परिशिष्ट अध्याये में प्रत्याहार का 'सङ्ग्रहण' 'संकोच' में अर्थ विद्यमान हैं ।[10]

'स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः' इस प्रकार प्रत्याहार की परिभाषा दी गई है ।[11] व्याकरणशास्त्र में भी 'प्रत्या+हृ' इसका संक्षेप अर्थ उपलब्ध होता है ।[12] प्रत्याहार शब्द का प्रयोग महाभाष्य में भी प्राप्त होता है । महाभाष्य में चतुर्दश स्थानों में प्रत्याहार शब्द का प्रयोग है ।[13] पतंजलि कृत महाभाष्य में आह्निक का नाम 'प्रत्याहारह्निकम्' है ।[14] प्रत्याहार सूत्रों में वर्णों / अक्षरों का समाम्नाय है । इसीलिए अक्षरसमाम्नाय अथवा वर्णसमाम्नाय इस प्रकार संज्ञा दी गई है ।[15] महाभाष्यकार में अक्षरसमाप्नाय तथा वर्णसमाम्नाय इन संज्ञाओं का बहुधा प्रयोग किया है । महाभाष्य में अक्षरों अथवा वर्णों की परिभाषा भी दी गई है ।[16]

चतुर्दश प्रत्याहार सूत्रों में अनुबन्ध :

प्रत्याहार सूत्रों द्वारा प्रत्याहारों का निर्माण होता है । इन सूत्रों में अन्तिम वर्णों को (ण् क् ङ् च् ट् ण् म् ञ् ष् श् व् य् र् त्) अनुबन्ध कहते हैं । अनुबन्धों के द्वारा ही प्रत्याहारों के

---

7. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः (मन्त्र 16–17) (श्रृणु वाले प्रवक्ष्यामि तमल्वेदमविस्तरम्। यद्बीजं वेदशास्त्राणां धर्मार्थकाममोक्षक्ष्म्।।6।।, एतानि सन्ति सूत्राणि संख्यायां नव पंच च। अल्वेद इति विद्वद्भिणितान पुरातनैः।।17।।
8. अल्वेद प्रथम मण्डलम्, प्रथमोऽध्यायः मन्त्र–18, (एतान्येव हि सूत्राणि विद्याः सन्ति चतुर्दश। एतान्येव यमा इन्द्रा मनवो ध्रुवतारकः ।।18।।
9. शांखायन ब्राह्मण 4/1 (महाभाष्य प्रदीप प्रकाश भूमिका पृ॰ 13 उद्धृतम्)
10. लिखा नहीं
11. योगदर्शनम् 2/54
12. महाभाष्यम् – 1.1.69 : तत्र प्रत्याहारग्रहणे सवर्णाग्रहणमनुपदेशात्।
13. महाभाष्यम् – 1.1.69
14. महाभाष्यम् – 1.1.2
15. अल्वेद भूमिका मन्त्र–2 (स चाक्षरासमन्नायो वाक्समाम्नायसंज्ञकः। ब्रह्मराशिरिति व्राह महाभाष्ये पतंजलिः।।)
16. महाभाष्यम् 1.1.2 : अश्नोतेर्वा सरोऽक्षरम्। वर्णं वाऽऽहुः अथवा पूर्वसूत्रे वर्णस्याक्षरमितिं संज्ञा क्रियते।

निर्माणकी प्रक्रिया सिद्ध होती हैं । प्रत्याहारों में अनुबन्धों का ग्रहण नहीं किया जाता । क्योंकि 'हलन्त्यम्'[17] इस सूत्र के द्वारा अनुबन्धों की इत्संज्ञा होती है तथा 'अदर्शनं लोपः'[18] इस सूत्र के द्वारा इत्संज्ञक वर्णों का लोपसंज्ञा हो जाती है । तदनन्तर 'तस्य लोपः'[19] इस सूत्र के द्वारा लोप हो जाता है । महाभाष्ये में इस विषय में कहा गया है कि :–

'प्रत्याहारे अनुबन्धानां कथमज्ग्रहणेषु न।[20]

महाभाष्यकार ने अनुबन्धों के अग्रहण के विषय में शंका प्रस्तुत की है तथा उनके समाधानों पर विचार किया है । यदि अनुबन्धों का ग्रहण होता है तो 'दधि णकारीयति', 'मधु णकारीयति' में णकारयति का णकार अच् प्रत्याहारों में आ जायेगा । यदि णकार अच् प्रत्याहार में आ जायेगा तो 'इको यणचि'[21] इस सूत्र में 'दधि', 'मधु' इस शब्द में यकार को यण् हो जायेगा । अर्थात् 'मधु णकारीयति' यहां 'मध्व् णकारीयति', दधिणकारीयति इसका परिवर्तित रूप दध्य् णकारीयति ऐसा हो जायेगा । इस प्रकार उ के स्थान पर व तथा इ के स्थान पर य इस प्रकार यणादेश हो जायेगा । महाभाष्ये में इसके लिए तीन समाधान प्रस्तुत किये गये हैं :– (क)आचार्यों के व्यवहार द्वारा ज्ञात होता है कि इन अनुबन्धों का प्रत्याहार में ग्रहण नहीं होता क्योंकि अनुबन्धों में पाणिनि प्रभृति आचार्यो ने अच् आदि का प्रयोग नहीं किया ।[22] इसका अर्थ है कि यदि आचार्य अनुबन्धों में प्रत्याहारों का ग्रहण चाहते हो ककार का अच् प्रत्याहार में आने से ककार के बाद यण् अवश्य होगा । परंतु 'तृषिमृषि कृषेः काश्यपस्य'[23] इस सूत्र में 'मृषि' शबद के इकार को यण् न होता, अर्थात् आचार्यों के व्यवहार से ज्ञात होता है कि अनुबन्धों का ग्रहण नहीं होता।

---

17. पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्र संख्या 1.3.3
18. अष्टाध्यायी सूत्र संख्या 1.1.60
19. वही, 1.3.9
20. महाभाष्यम् 1.1.2
21. अष्टाध्यायी सूत्र संख्या 6.1.77
22. महाभाष्यम् 1.1.2 : आचारात् अर्थात् आचार्याणामुच्चारात्।
23. पाणिनीय अष्टाध्यायी 1.2.25

(ख) अनुबन्ध अप्रधानरूप में होते हैं[24] अर्थात् अच् प्रत्याहार में अनुबन्धों का ग्रहण नहीं होता । अच् प्रत्याहार में प्रधानरूप से अचों का उपदेश किया गया है, हलों का नहीं । अर्थात् अचों में अचों का उपदेश तथा हलों में हलों का उपदेश विद्यमान है ।

(ग) अनुबन्धों के अग्रहणविषय में तृतीय साधान हैं :–

'लोपश्च बलवत्तरः' अर्थात् यदि 'हलन्त्यम्'[25] इस सूत्र से ही इत्संज्ञा होती हैं 'तस्य लोपः'[26] इस सूत्र से लोप हो जाता है । 'सर्वविधिभ्यो लोपविधिरिड्विधिश्च बलवान्'[27] अर्थात् लोप बलवान है । प्रत्याहारों के निर्माण से पूर्व अनुबन्धों का लोप होता है । 'आदिरन्त्येन संहेता'[28] यह प्रत्याहारविधायकं सूत्र है । अर्थात् अन्तिम इत्संज्ञक वर्णों सहित आदि और मध्य सभी वर्णों की संज्ञा का बोधक है ।

मुख्य प्रत्यहारों का निर्माण एवं उदाहरण :

यथा –

अच् प्रत्याहार : अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ इति में वर्ण अच् प्रत्याहार में आते हैं । 'इको यणचि'[29] इस सूत्र का उदाहरण है । अच् प्रत्याहार चार सूत्रों से मिलकर बना है :– अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच् । अच् प्रत्याहार में अचों का वर्णन है ।

हल् प्रत्याहार :

ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख ज छ ढ थ च ट त क प श ष स ह ये सभी वर्ण हल्प्रत्याहार में विद्यमान हैं, हल् प्रत्याहार दस प्रत्याहार सूत्रों से मिलकर बना है । 'हलन्त्यम्'[30] इसका उदाहरण है ।

अल् प्रत्याहार :

---

24. महाभाष्यम् 1.1.2 : अप्रधानत्वात् ।
25. अष्टाध्यायी 1.3.3
26. अष्टाध्यायी 1.3.9
27. परिभाषेन्दुशेखर परिभाषा संख्या 100
28. अष्टाध्यायी 1.1.17
29. अष्टाध्यायी 6.1.77
30. तदेव, 1.3.3

अल् प्रत्याहार में अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ धज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह सभी वर्ण समाहित हैं । 'अलोऽन्त्यस्य'[31] इसका उदाहरण है । अल् प्रत्याहार का निर्माण चतुर्दश सूत्रों के द्वारा होता है ।

इन्हीं अक्षरों और वर्णों के समूह पर पण्डित नीरजनाभ ने 'अल्वेद' ग्रंथ की रचना की ।[32] उन्होंने कहा कि जो ये शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण और ज्योतिष छः अंग हैं यह वेदों के नहीं अपितु अल्वेद के ही हैं ।[33] अल्वेद में सनातन धर्म के सम्पूर्ण विषय अच्छी रीति से दिखलाये हैं ।[34] गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि, व्यास और जैमिनि इन छः कर्त्ताओं के सिद्धान्त भी अल्वेद में दिखाये गये हैं ।[35] इस ग्रंथ में पण्डित नीरजनाभशास्त्री जी ने अपने और मथुरादेवी नाम ब्राह्मणी के संवाद के माध्यम से सभी विषयों को उजागर किया है । 'अल्वेद' अर्थात् अक्षरसमाम्नाय/वाक्समाम्नाय को सभी वेदशास्त्रोंका बीज अथवा भण्डार और जो धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के देने वाला है।[36] यह अल्वेद चौदह सूत्रों का समूह हैं । ये चौदह सूत्र ही चौदह विद्या हैं । ये ही चौदह यम, चौदह इन्द्र, चौदह मनु और चौदह ध्रुवतारक हैं ।[37] अल् प्रत्याहार के चौदह सूत्रों को ही लेखक ने ब्रह्मा, विष्णु और शिव की अनादि प्रतिमा मानकर इनकी उपासना करने को कहा है ।[38] अल्वेद में प्रत्याहारों की प्राचीनता और महत्ता प्रदर्शित करने के लिए तुलनात्मक रूप से वर्णन किया है । यथा अच् प्रत्याहार चार सूत्रों (अइउण् ।1। ऋलृक्

---

31. तदेव, 1.1.52
32. अल्वेद भूमिका मन्त्र–5 तेषामेव विनोदार्थं देवद्विजप्रसादतः। विरच्यते मयाल्वेदो नीरजनाभशास्त्रिणा।।)
33. अल्वेद भूमिका मन्त्र–6 (शिक्षाकल्पो निरुक्तं च छन्दो व्याकरणं तथा। ज्योतिषञ्च षडङ्गानि सन्त्यल्वेदस्य सूरयः।।6।।
34. अल्वेद भूमिका मन्त्र–10 (अल्वेदे दर्शिता सम्यक् सर्वे धर्माः सनातनः। कुर्वन्तु जन्मसाफल्य–मादायाल्वेदपुस्तकम्।।10।।
35. अल्वेद भूमिका मन्त्र–11 (गौतमस्य कणादस्य कपिलस्य पतञ्जलेः। व्यासस्य जैमिनेश्चास्मिन् सिद्धान्ता दर्शिता मया।।)
36. अल्वेद प्रथम–मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र 16 (श्रृणु वाले प्राक्ष्यामि तमल्वेदमविस्तरम्। यद्बीजं वेदशास्त्राणां धर्मार्थकाममोक्षदम्।।)
37. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र–18 (एतान्येहि सूत्राणि विद्याः सन्ति चतुर्दश। एतान्येव यमा इन्द्रा मनवो ध्रुवतारकः।।
38. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र 20 (अल्वेदश्च परा वाले प्रतिमा ब्रह्मणो मता। विष्णोश्च शंकरस्यापि सेवनीयामहात्मभिः।।

।2। एओङ् ।3। ऐओच् ।4) से मिलकर बना है । इन चार सूत्रों को ।1 2 3 4। इस प्रकार देखने से इनकी संख्या सहस्र हो जाती है ।[39] इस सहस्र संख्या को ब्रह्मा के चार शिरों एवं यजुर्वेद के मंत्र के अनुसार सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष तथा सहस्रपात् से तुलना की गई है ।[40] प्रत्याहारों में स्थित पंचम सूत्र (हयवरर्/5) में 'ह' को ब्रह्मा या प्रजापति माना है ।[41] इसी प्रकार लष् प्रत्याहार में चार सूत्रों (लण्/6/ ञमङणनम् ।7। झमञ् ।8। घढघष् ।9।) का योग है । इन चार सूत्रों की संख्या (1/2/3/4) सहस्र हो जाती है यही ब्रह्मा के सहस्र अक्ष हैं ।[42]

इसी प्रकार जर् प्रत्याहार भी चार सूत्रों (जबगडदश् ।10।खफछठथचटतव् ।11। कपय् ।12। शषसर् ।13।) से मिलकर बना है जिनकी संख्या सहस्र हो जाती हैं यही संख्या ब्रह्मा के सहस्र पाद हैं ।[43] जो हकार पंचम सूत्र (हयवरट्) में स्थित है उसको प्रजापति कहा है तथा जो चौदहवें सूत्र (हल्) में स्थित हैं उसके विषय में कहा है कि जिस प्रकार वह अविनाशी पुरुष पृथिवी को स्पर्श कर दश अंगुल के प्रमाण से उल्लंघन करके स्थित है हकार भी दश अंगुल अर्थात् पंचम सूत्र में स्थित हयवरट् के हकार से चौदहवें सूत्र में स्थित हल् का हकार) के प्रमाण से उल्लंघन करके स्थित है ।[44]

अथर्ववेद में प्रश्न है कि जिस परमात्मा के अंग में सम्पूर्ण 33 देवता इक्ट्ठे हुए हैं उस परमात्मा का क्या नाम है? अर्थात् वह कौन है?[45] पण्डित नीरजनाभ शास्त्री ने इसका उत्तर देते

---

39. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र 24 (अचश्चत्वारि सूत्राणि शिरांसि परमेष्ठिनः। हकारः पुरुषो ज्ञेयो यश्च पञ्चमसूत्रगः।।)

40. यजुर्वेद अध्याय 17 मन्त्र 2 (इमा मे अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्चैता मे अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामु–स्मिल्लोके ।।2।।)

41. यजुर्वेद अध्याय 32 मन्त्र 4 (एषो ह देवः प्रहिशोऽनु सर्वाः पूर्वी ह जातः स ड गर्भेअन्तः स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।।)

42. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र–25 (लषश्चत्वारि सूत्राणि ह्यक्षाणिं द्रुहिणस्य च। जरश्चत्वारि सूत्राणि पादाश्च परमेष्ठिनः ।।25)

43. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र 25 (लषश्चत्वारि सूत्राणि ह्यक्षाणिं द्रुहिणास्य च। जरश्चत्वारि सूत्राणि पादाश्च परमेष्ठिनः।।)

44. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र 26 (स च पञ्चमसूत्रस्थो हकारो ब्रह्मवाचकः। स्व स्थानाछशमे सूत्रे सलकारो (दशाङ्गुलः।।) एवम् यजुर्वेद अध्याय 17 मन्त्र 2)

45. अथर्ववेद काण्ड 10, प्रपाठक 23, अनुवाक 4 मंत्र 13 (यस्य त्रयस्त्रिंशदेवा अंगे सर्वे समाहिताः। स्कंभं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।)

हुए कहा है कि यह अल्वेद ही वह परमात्मा है क्योंकि अल् प्रत्याहार में 33 हल् हैं और यह 33 हल ही 33 देवता हैं ।[46] अथर्ववेद में प्रश्न है कि परमात्मा की पहली चार नाड़ियां दश दिशाओं को प्रस्थान करती हैं वह परमात्मा कौन है?[47] इसके उत्तर में भी अल्वेद ही है । अच् प्रत्याहार के चार सूत्रों को (अइउण् /1/ ॠलृक् /2/ एओङ् /3/ ऐऔच् /4/) सूत्ररूप नाड़ियां हल् प्रत्याहार के दश सूत्र रूप दिशाओं में प्रस्थान करती है अर्थात् सभी हलों में अच् विद्यमान हैं ।

---

46. अल्वेद प्रथम मण्डलम् प्रथमोऽध्यायः मन्त्र–29 (अत्राल्वेदे त्रयस्त्रिंशद्धलः सन्ति विचक्षणे। त एव हि त्रयस्त्रिशछेवाः सन्ति न संशयः।।)

47. अथर्ववेद काण्ड 10, प्रपाठक 23, अनुवाक–4, मन्त्र 16 (यस्य चतस्त्रः प्रदिशो नाट्यास्तिष्ठन्ति प्रथमाः। यज्ञो यत्र पराक्रान्तः स्कं भं तं बूहि कतमः स्विदेव सः।।)